Date.....

Name → Mahima Rani
Class → B.A (H)
Roll No → SKT/19/24
Topic → अभिनय के प्रकार
Subject → Acting and script writing.

अभिनय के प्रकार

—x—x—x—

अभिनय के चार प्रकार — आङ्गिक, वाचिक, सात्विक तथा आहार्य। नाट्यशास्त्र में प्रत्येक के विवेचन में कई-कई अध्याय लगे हैं। अभिनय के इन्हीं प्रकारों के प्रयोग से सामाजिक को लगता है कि हम वस्तुतः उस युग और परिस्थिति में पहुँचकर पात्रों के व्यवहार का अनुभव कर रहे हैं।

1. आङ्गिक अभिनय :- अभिनेताओं के द्वारा हाथ-पैर, कमर-सिर आदि की चेष्टाओं के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। इसके तीन भेद हैं - शारीरिक, मुखगत और चेष्टाकृत। इनके भी भेदोपभेदों से अभिनय या विविध्य जाति होता है।

2. वाचिक अभिनय :- वाचिक अभिनय के अन्तर्गत छन्दोविधान, काव्य के गुण-दोष अलंकार तथा भाषा-विज्ञान निहित है। अभिनेताओं के द्वारा पाठ्य अंश इसी अभिनय के द्वारा प्रकट होता है संस्कृत तथा प्राकृत-भेदों का विवेचन इसी प्रसंग में भरत ने पात्रों की विविधता की दृष्टि से किया है। कुछ पात्र संस्कृत-प्रयोग करेंगे तो कुछ प्राकृत के शौरसेनी, महाराष्ट्री मागधी आदि रूपों का प्रयोग करेंगे।

Scanned with CamScanner

Date...............

सात्विक अभिनय :- सात्विक अभिनय भावों की अभिव्यक्ति को कहते है। नाट्यशास्त्र के षष्ठाध्याय में रसो का और सप्तमाध्याय में भावो का विवेचन करते हुए भरत ने सात्विक अभिनय पर विस्तृत रूप से लिखा है। किस भाव का प्रकाशन कैसे किया जाता है इसका व्यापक विधान है जैसे शोक का अभिनय अश्रुपात विलाप, परिदेवना विवर्णता, स्वरभङ्ग शिथिल गात्र, क्रन्दन, आक्रन्दन आदि अनुभावों से करें। स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभंग, विवर्णता, वेपथु, अश्रु-प्रवाह तथा प्रलय - ये सात्विक भाव है। इन्हें भी कुछ लोग अनुभावों की कोटि में रखते है। शरीर में सत्त्वगुण की वृद्धि से स्वभावतः जन्म होने के कारण ये 'सात्विक' कहलाते हैं। इनका भी मञ्च पर प्रकाशन होता है जिससे रसोद्भाव में सुविधा होती है।

आहार्य अभिनय :- वेश-भूषा की सजावट को कहते है जिसे भरत ने 'नेपथ्य-रचना' कहा है। आहार्याभिनयों नाम ज्ञेयो नेपथ्यजो विधिः नाट्यशास्त्र युक्त अभिनेता की कृत्रिम वेश-रचना है जिससे उसे मूल-पात्र के रूप में समझा जाता है इस अभिनय का सम्बन्ध रंगमंच से है क्योंकि इसका विधान नेपथ्य में पात्रों की सजावट के रूप में होता है। इसके प्रस्त (चर्मादि से रूप बनाना, यन्त्र से हाथी, पर्वत आदि को दिखाना) अलंकार अंगरचना और संजीव - ये चार प्रकार कहे गये है इस प्रकार अभिनय के विविध पक्षों का निरूपण हुआ है।

संस्कृत नाट्यशास्त्रियों ने रङ्गमञ्च की व्यवस्था पर विस्तृत विचार किया है। संगीतमकरन्द, भावप्रकाशन, संगीतरत्नाकर, मानसार आदि ग्रन्थों में भी नाट्याभिनय के लिए रङ्गमञ्च के आधार-प्रकार का विवरण है। नाट्यशास्त्र तो इस विषय का महाकोश ही है।

Harsha Kumari